पुस्तक समीक्षा

कर्पूरी ठाकुरः जन से नायक तक, लेखक–कुमार अमरेन्द्र, प्रकाशक–जागृति साहित्य प्रकाशन, पटना–800006, प्रथम संस्करण, 2011

समीक्षक मायानन्द*

प्रस्तुत पुस्तक जननायक कर्पूरी ठाकुर का जीवन चरित है। आठ अध्यायों में विभाजित करके लेखक ने इस चरित लेखन में दुर्लभ सूचनाओं से ओत–प्रोत सामग्री संग्रहीत की है। लेखक ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि जननायक कर्पूरी ठाकुर का जीवन–चरित् सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, धर्म निरपेक्षता जैसे मानव मूल्यों के संघर्ष–पथ पर बिहार की जन्म भूमि को गौरव प्रदान करने के लिए बीसवीं सदी का बुद्ध चरित ही है। ईसा पूर्व पॉचवी सदी में भगवान बुद्ध ने कर्मकाण्ड, ब्राह्मणवाद, जाति–प्रथा पर आधारित शोषण के खिलाफ जेहाद छेड़ा था और जीवन–पर्यनत विश्रामहीन क्षणों की छाया में अपने को उत्सर्ग कर दिया था। तत्कालीन सामाजिक सुधारों के लिए उन्होंने एक ऐसी विधा का आश्रय लिया जो सम्पूर्ण समाजशास्त्र का स्वरूप था। बिहार की धरती पर जननायक कर्पूरी ठाकुर ने इन आदर्शों को साकार रूप प्रदान करने के लिए अविराम गति से चलते–चलते संघर्ष के पथ पर शूलों और कांटों की चिंता से दूर अपने जीवन की आहूति दे ही। यह जीवन चरित् आम जनता के नायक का जीवन–चरित् हैः

पुस्तक की गुणवत्ता से मुग्ध होकर महान् साहित्यकार प्रो0 (डॉ0) कुमार विमल ने लिखा है कि लेखन की मान्यताएँ सबके लिए स्वीकार्य हो कथवा नहीं, किन्तु, इसमें दो मत की गुंजाइश नहीं है कि लेखक ने यह पुस्तक अपेक्षित अध्ययन और अनुशीलन के उपरांत अभिनिवेशपूर्वक लिखी है। डॉ0 कुमार विमल ने अपने 'दो शब्द' में कर्पूरी ठाकुर के विषय में यह भी लिखा है कि –'कर्पूरी जी लोक–चेतना से जुड़े हुए राजनीतिक शिल्पी थे और युगों से 'बन्द आँखों' को खोलने में तथा रूद्ध कंठो को वाणी प्रदान करने में निपुण थें। लोक–चेतना में सिहरन, थिरकन और थरथरी की जो पहचान कर्पूरी जी को थी, वह अब देखने को नहीं मिलती। यदि वे अपनी लोकप्रियता को ाजनहित के कार्यो में अपनी इच्छा के अनुरूअनुदित कर पाते, तो इस युग की राजनीति में एक विशद लोक मंगल की स्थापना हो जाती। शायद, उनकी असामयिक मृत्यु के कारण उनकी लोकप्रियता प्रवर्त्तन और व्यवहार्यता के धरातल पर कुछ मिहिकान्छन्न रह गई।''

बिहार की राजनीति में कर्पूरी ठाकुर की उपस्थिति आज के बदले हुए संदर्भ में कुछ ज्यादा ही शिद्धत से महसूस की जा रही है। उन्होंने अपने नई बिहार के समय–समाज में परिवर्त्तन की जो जींव रखी उसकी तस्वीर तासीर आज भी कम नहीं हुई है बल्कि विषम होती स्थितियों में और प्रासंगिक हो उठी है। 'सादा जीवन उच्च विचार' की साक्षात् वे गंगा थे।

लेखक डॉ0 कुमार अमरेन्द्र ने गहरे कंसर्न के साथ कर्पूरी ठाकुर को समग्रता में मूल्यांकित करने की भरसक कोशिश की है। इस जीवन–चरित् को पढ़ते हुए कर्पूरी ठाकुर जी के रैखिक विकास के साथ ही तत्कालीन समय, समाज और राजनीति की गई प्रवृत्तियाँ, उनकी आन्तरिक और वाह्य गुत्थियॉ आ उपस्थित होती है। बिहार में गैर कांग्रेसवाद की आवाज को मुखर स्वर देने का सवाल हो या फिर बहुसंख्यक आवादी के हित चिन्तन का सवाल या फिर अंग्रेजी की जगह हिन्दी की अहमियतको रेखांकितकरने की पहल हो या सोशलिस्ट आन्दोलन में सक्रियता,इन मसलों पर उनकी रजणनीतिक पहल का कायल पूरा बिहार रहा है। विनोभा भावे को लिखे कर्पूरी जी के दो पत्र की अवकिल प्रस्तुति इसकृति की धाती है।

लेखक ने जीवन–चरित लेखन का पारम्परिक शिल्प अपनाया है। निःसन्देह इस पारम्परिकता में सूचना का प्रवाह है, हॉलाकि उस स्तर की पड़ताल की जुगत कम है, वावजूदयह एक मूल्यवान कृति है, क्योंकि इसतरह के चरित नायक आज ढूढे नहीं मिलते।

पुस्तक की गंभीरता, रोचकता, सरलता तथा लोकप्रियता वास्तव में सफल भविष्य की ओर संकेत करती है। सचमुच में डॉ0 कुमार अमरेन्द्र इस श्रम साध्य रचना के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

****

***जे.आर.एफ. (आई. सी. एच. आर., नई दिल्ली) 'शोधप्रज्ञ, इतिहास विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना**